**बाइबल परमेश्वर और एक दूसरे के साथ संबध बहाल करने के बारे में क्या कहती है।**

यह बाइबल अध्ययन, परमेश्वर और एक दूसरे के साथ संबध बहाल करने के बारे में बाइबल क्या सिखाती है के बारे जांच करने के लिए आपको सहायता करती है। यह अध्ययन आप स्वयं या छोटा समूह में कर सकते हैं। यह विचार करने के लिए समय निकालें कि यह आप और आपके जीवन और सेवा पर कैसे लागू होता है।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दिजिए। आप उल्लेखित वचनों में उत्तर को पायेंगे। कृपया बेहतर समझ के लिए इन शास्त्रों के आस-पास के श्लोक भी पढ़ें।

1. यीशु मसीह के सुसमाचार का मुख्य संदेश क्या है? (लूका 24:47; प्रेरितों 26:18)

2. क्षमा प्राप्त करने के लिए हमें क्या करने की जरूरत है? (भजन संहिता 32:1-5; 1 यूहन्ना 1:8-10)

3. क्षमा किये जाने का क्या लाभ है? (रोमियो 6:23; याकूब 5:16; प्रेरितों 3:19-20)

4. हमें उस व्यक्ति को क्यों माफ करना चाहिए जिसने हमारे साथ गलत किया है?
(मत्ती 6:12, 14-15, 18:23-35; इब्रानियों 12:14-15)

5. एक दोस्त/पति/पत्नी जिन्होने लगातार आपके खिलाफ पाप किया है उसके प्रति आपका स्वाभाव कैसा होना चाहिए? (मत्ती 18:21-22; कुलुस्सियों 3:13)

6. मन फिराव क्या है? (लूका 3:8; प्रेरितों 26:20; यशायाह 55:7)

7. कैसे एक व्यक्ति अपने स्वाभाव को सुधार सकता है? (रोमियों 7:25 (18-25); इब्रानियों 12:24)

छोटे समूह के विचार-विमर्श के लिए प्रश्न:
8. आप अपने दोस्त/पति/पत्नी से कुछ ऐसा किये जो उन्हे चोट पहुचाया या निराश किया के लिए कैसे क्षमा मांगेंगे?

मौन व्यक्तिगत प्रतिबिंब :
9. आप कैसे परमेश्वर से कुछ ऐसा जो आपने किया है जो उसे चोट पहुचाया या निराश किया है के लिए कैसे क्षमा मांगोगे?

**बाइबल परमेश्वर और एक दूसरे के साथ संबध बहाल करने के बारे में क्या कहती हैः का उत्तर**

**1. यीशु मसीह के सुसमाचार का मुख्य संदेश क्या है? (लूका 24:47; प्रेरितों 26:18)**

जो लोग अपने पापों से मन फिराव करते है उनके लिए क्षमा है। मन फिराव हमें परमेंश्वर के करीब ले जाती है,परमेश्वर के परिवार में लाती है (अंधकार के राज्य से ज्योति के राज्य में लाता है)।

**2. क्षमा प्राप्त करने के लिए हमें क्या करने की जरूरत है? (भजन संहिता 32:1-5; 1 यूहन्ना 1:8-10)**

ईमानदार बने! आपने जो पाप या गलती किया है उसे परमेश्वर के सामने अंगीकार करे और उसे आपको क्षमा करने के लिए बोले। स्वयं के लिए (शरीर, प्राण, आत्मा), दूसरो के लिए, परमेश्वर के लिए जो किया गया है और पाप की बहुतायत पाप को जोड़ती है (उदाहरण, झूठ, धोखा इत्यादि) उसे समझे।

**3. क्षमा किये जाने का क्या लाभ है? (रोमियो 6:23; याकूब 5:16; प्रेरितों 3:19-20)**

अनंत जीवन,चंगाई। परमेश्वर हमारे प्रार्थनाओं का उत्तर देता है। विश्राम और शांति का समय।

**4. हमें क्यों दूसरों को क्षमा करना चाहिए जिन्होने हमारे साथ गलत किया है? (मत्ती 6:12, 14-15, 18:23-35; इब्रानियों 12:14-15)**

परमेश्वर हमें केवल तभी क्षमा करता है जब हम दूसरो को क्षमा करते है। यदि हम क्षमा नही करते है तो हमें पीड़ित किया जा सकता है। हममें कड़वाहट की जड़ दूसरो को अशुद्ध कर सकती है। क्षमा बहुमूल्य है।

**5. एक दोस्त/पति/पत्नी जिन्होने लगातार आपके खिलाफ पाप किया है उसके प्रति आपका स्वाभाव कैसा होना चाहिए? (मत्ती 18:21-22; कुलुस्सियों 3:13)**

लगातार क्षमा करना, दूसरों की गलतियों को सहना। धीरे-धीरे, विनम्रतापूर्वक दूसरों की मदद करें।

**6. मन फिराव क्या है? (लूका 3:8; प्रेरितों 26:20; यशायाह 55:7)**

यह पाप/स्व

यं से दूर होकर परमेश्वर की ओर मुड़ने का निर्णय है। मन फिराव परिवर्तन का एक निर्णय है। यह सभी के लिए एक खुला चुनाव है।

**7. कैसे एक व्यक्ति अपने स्वाभाव को सुधार सकता है? (रोमियों 7:25 (18-25); इब्रानियों 12:24)**

केवल यीशु मसीह ही हमें सुधार सकता है। केवल वही हमारी सहायता कर सकता है यदि हम उससे सहायता मांगे तो।

**8. आप अपने दोस्त/पति/पत्नी से कुछ ऐसा किये जो उन्हे चोट पहुचाया या निराश किया के लिए कैसे क्षमा मांगेंगे?**

ईमानदारी पूर्वक और नम्रतापूर्वक जो गलती और जो चोट हमने पहुचाई है उसे अंगीकार करना। कार्यो को सही साबित करने के लिए नही। सच्चाई से दूसरे व्यक्ति से हमें क्षमा करने की मांग करे। भरपाई करने के लिए'-खुले रूप से,यदि वे संबध को बहाल करने के इच्छुक है तो।

**9. आप कैसे परमेश्वर से कुछ ऐसा जो आपने किया है जो उसे चोट पहुचाया या निराश किया है के लिए कैसे क्षमा मांगोगे?**

जैसे ऊपर के 8 के साथ,ईमानदारी पूर्वक और नम्रतापूर्वक जो गलती और चोट हमने दूसरो को और परमेश्वर को पहुचाई है उसे जानते हुए। सच्चाई से परमेश्वर को हमें क्षमा करने के लिए पूछे। परमेंश्वर हमारे ह्नदयों को जनता है।